रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– के पी सिटी– 67/2018–20

अधिकार किसको जानने के लिए भारत सरकार की वेबसाइट www.dhr.gov.in लॉगिन कर क्लिक करें अल्टरनेटिव मेडिसिन तथा गज़ट पढ़ने हेतु log in करें www.behm.org.in

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

शोक समाचार

, बोर्ड आफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन,उ0प्र0 के प्रबन्ध कमेटी के पूर्व सदस्य वरिष्ठ वयोवृद्ध इलेक्ट्रो होम्योपैथ डा0 साबिर अली सिद्दीकी की धर्मपत्नी एवं बोर्ड आफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन,उ0प्र0 के प्रबन्ध कमेटी के सदस्य डा0 अम्मार बिन साबिर की माता जी का देहान्त दिनांक 23 नवम्बर, 2018 को हो गया।

बोर्ड आफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन,उ0प्र0 के सभी सदस्यगण एवं गज़ट परिवार संकट की इस घडी में उनके साथ है।

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127/204 'एस' जूही, कानपुर–208014

वर्ष –40 ● अंक –23 ● कानपुर 1 से 15 दिसम्बर 2018 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य ₹100

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में संवाद आवश्यक

किसी भी चीज व समाज को जीवित रहने के लिए आवश्यक होता है कि उसकी अच्छाईयों और बुराईयों के बारे में आम जन को पता लगता रहे जिससे कि उसके भविष्य का मार्ग सुगम और सुदृढ़ होता रहे, यह काम संवाद के माध्यम से ही सम्भव होता है, चूंकि संवाद एक दूसरे के पास पहुँचने से ही कार्यों की समीक्षा होती है लोगों के दृष्टिकोण आते हैं समाज हमें किस तरह से स्वीकार कर रहा है इसकी भी जानकारी हमें इसी माध्यम से होती है और यह काम बखूबी निभाते हैं समाचार पत्र।

समाचार पत्रों को विचारक अपनी–अपनी तरह से परिभाषित करते हैं कोई उसे समाज का दर्पण कहता है, तो कोई उसे समाज सुधार का माध्यम मानता है, तो कोई उसे समाज के दायित्व निर्वाहक के रूप में स्वीकार करता है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में भी समाचार पत्रों का विशेष योगदान है इन्ही समाचार पत्रों के माध्यम से इलेक्ट्रो होम्योपैथी की गतिविधियों के बारे में जानकारी होती है लगभग आज से 100 वर्ष से भी अधिक इलेक्ट्रो होम्योपैथी में समाचार पत्रों के छपने का सिलसिला प्रारम्भ हुआ था प्राप्त जानकारी के आधार पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी का सबसे पहला समाचार पत्र डा0 बल्देव प्रसाद सक्सेना द्वारा लखनऊ में 1907 में प्रकाशित किया गया था इस समाचार पत्र का नाम रिसाला माहनामा इलेक्ट्रो होम्योपैथी था इसका प्रकाशन मात्र 5 वर्ष तक ही रहा, 1912 में निजी कारणों से इस मासिक समाचार पत्र का प्रकाशन बन्द हो गया, लेकिन एक बार जो सिलसिला शुरू हो जाता है तो वह कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में चलता ही रहता है इस सिलसिले को डा0 नन्दलाल सिन्हा ने जारी रखा, डा0 नन्दलाल सिन्हा द्वारा 2 समाचार पत्रों का प्रकाशन किया गया जिनका नाम था मेडिसिनर उसके बाद माईन रेमेडीज़ नामक पत्रिका का प्रकाशन किया गया यह दोनों समाचार पत्रिकायें अंग्रेजी भाषा में थीं जन सामान्य तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी की बात को पहुँचाने के लिए डा0 नन्दलाल सिन्हा द्वारा (Perfect Health) स्वास्थ्य रक्षा नामक पत्रिका का प्रकाशन हिन्दी में किया गया, इस पत्रिका ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी में क्रान्तिकारी कार्य किये चूँकि ये सारी की सारी पत्रिकायें आज़ादी के पहले की थीं इसलिए इनका कार्यक्षेत्र आज के पाकिस्तान, बंगलादेश, सिलोन (अब श्रीलंका) तक विशेषतयः था उस समय इन पत्रिकाओं के माध्यम से लोगों के मध्य इलेक्ट्रो होम्योपैथी के समाचार पहुँचते थे लोग इलेक्ट्रो होम्योपैथी के बारे में जानते थे इसका लाभ डा0 नन्दलाल को यह हुआ कि पूरे विश्व से लोग इलेक्ट्रो होम्योपैथी सीखने की इच्छा से डा0 सिन्हा से जुड़ने लगे और एक तरह से सम्पूर्ण विश्व में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की पहचान धीरे–धीरे होने लगी।

देश की आजादी के बाद कुछ दिनों तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी में अजीब सी खामोशी रही, कानपुर के बाद पटना इलेक्ट्रो होम्योपैथी का सबसे महत्वपूर्ण शहर हो गया था, पटना के ही डा0 ब्रज बिहारी प्रसाद सिंह द्वारा मेडिसिनर नामक पत्रिका का प्रकाशन किया गया इसी क्रम में पटना के ही डा0 सी0 डी0 मिश्रा "प्रभाकर" द्वारा भी एक इलेक्ट्रो होम्योपैथी पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया देश के अन्य कोनों से भी पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारम्भ हो चुका था

1953 से लेकर 1969 तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी में आन्दोलनों का दौर चला कुछ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के महत्वपूर्ण आधार स्तम्भ जो आज गुमनाम हो चुके हैं जैसे डा0 मुकुट बिहारी सिन्हा, डा0 मुरारी शरण श्रीवास्तव,डा0 युद्धवीर सिंह, डा0 काशी नाथ सिन्हा डा0 मोरध्वज सिंह प्रलयंकर, डा0 एस0 एम0 ए0 अज़ीज, डा0 रमाशंकर, डा0 एस0 एन0 झा आदि कुछ ऐसे नाम हैं जिन नामों की कभी तूती बोलती थी

आज की पीढ़ी में यह तो अप्रासंगिक हो चुके हैं लोग इनके बारे में जानना भी नहीं चाहते हैं, इन सारे के सारे स्तम्भों की प्रतिभा को हम नमन करते हैं जिन लोगों ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी की दस्तान कही धीरे–धीरे गुमनाम होते जा रहे हैं लेकिन इतिहास कभी भी किसी को नहीं भूलता और समय आने पर हर व्यक्ति के कार्यों का सम्मान होता है और यह कार्य करता है समाचार पत्र। आज जो लोग इन महान लोगों को भूलने का प्रयास कर रहे हैं ऐसे लोगों के लिए यह दो पंक्तियां समर्पित हैं ....

जैसे भूलों के पृष्ठों को नही माफ़ करता इतिहास,
अन्धकार की सीमा पर ही स्वागत पाता है प्रकाश।

इन प्रकाश पुंजों के कार्य इलेक्ट्रो होम्योपैथी के इतिहास में सदैव अंकित रहेंगे समाचार पत्रों के प्रकाशन का सिलसिला धीरे–धीरे बढ़ता चलता गया और उनका दायरा भी बढ़ता गया, लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से 14 जनवरी, 1979 को कानपुर से डा0 एम0 एच0 इदरीसी द्वारा इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट नामक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया इस पत्रिका ने जनता के बीच पैठ बनानी शुरू की, स्पष्ट और साफ सुथरी बात होने के कारण लोग बाग इस पत्रिका को पसन्द करने लगे, बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए प्रकाशक द्वारा इस त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन की अवधि घटाकर मासिक कर दी, धीरे–धीरे पूरे देश में इस पत्रिका की मांग होने लगी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सक और सम्बर्धकों की मांग पर इस पत्रिका को पाक्षिक करना पड़ा आज यह इलेक्ट्रो होम्योपैथी जगत में सर्वाधिक प्रसारित व पढ़ी जाने वाली एक मात्र पत्रिका है।

40 वर्षों से इस पत्रिका का नियमित प्रकाशन हो रहा है, 2003 से 2012 के कालखण्ड में जब बड़े–बड़े इलेक्ट्रो होम्योपैथी के दिग्गज अपनी गतिविधियों से किनारा कर रहे थे पाक्षिक इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट का प्रकाशन तब भी नियमित जारी रहा इसी प्रकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी मेडिकल न्यूज, स्वास्थ्य घोष, चिकित्सा पल्लव नामक पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ उत्तर प्रदेश के अलावा राजस्थान, बंगाल, बिहार,

शेष अंतिम पेज पर

- कार्य संस्कृति को सम्मान देना
- विकास की वास्तविक तसवीर दिखाना
- बातों को नहीं कार्य को उजागर करना
- अविस्मर्णीय स्तम्भों का स्मरण कराना
- हमारा प्रयास निष्पक्ष समाचार प्रस्तुत करना
- विकास हेतु सरकार का ध्यान आकृष्ट कराना

बोर्ड की सेमेस्टर परीक्षायें 26 दिसम्बर से

F.M.E.H. की सेमेस्टर तथा **A.C.E.H.** की परीक्षा आगामी 26 दिसम्बर, 2018 से प्रस्तावित हैं। **F.M.E.H.** एवं **A.C.E.H.** परीक्षाओं की सेमेस्टर परीक्षा का वार्षिक कैलेण्डर आपको पूर्व में सितम्बर 2018 के अंक पत्रकों के साथ भेजा जा चुका है। सितम्बर सेमेस्टर के लिये जो छात्र परीक्षा में बैठने से वंचित रह गये थे वे दिसम्बर सेमेस्टर में सम्मिलित हो सकते हैं ऐसे छात्र अपने परीक्षा फार्म शुल्क के साथ अपने केन्द्र के के माध्यम से बोर्ड कार्यालय को प्रेषित कर सकते हैं। यह जानकारी बोर्ड के रजिस्ट्रार डा0 अतीक अहमद ने गज़ट को एक भेंट में दी। **परीक्षा कार्यक्रम पेज 2 पर देखें।**

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में घमासान फिर शुरु

इलेक्ट्रो होम्योपैथी का यह दुर्भाग्य कहा जाये या इसे सौभाग्य, कुछ कदम प्रगति के पथ पर चलने के पश्चात इस पैथी के साथ प्रायः ऐसा कई बार होता आया है जिसमें इसके हितैषी ही इसकी बखिया उधेड़ने में लग जाते हैं, अपने आपको सच्चे पक्के इलेक्ट्रो होम्योपैथ कहलाने वालों ने आज फिर से अपना चेहरा दिखा ही दिया कि अगर हमें लाभ नही तो किसी को भी नहीं, वास्तव में यह तथाकथित नेतागण सिर्फ और सिर्फ अपना भला चाहते हैं और पैथी के नाम पर धनार्जन कर अपनी जेबें अभी भी भरना चाहते हैं , किसी भी प्रकार से धन आना चाहिये हम नहीं तो कोई नहीं, तभी तो इसका अधिकार पाने के चक्कर में ऊटपटांग बयानबाजी कर सोशल मीडिया में अपने आपको सबसे एक्टिव बता कर भोले–भाले इलेक्ट्रो होम्योपैथों को मूर्ख आज भी बना रहे हैं ऐसे लोगों से सचेत एवं सतर्क रहने का समय है अतः सावधान रहें।

नियमन की प्रक्रिया प्रगति की ओर

उत्तर प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों के रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया प्रगति की ओर है, शीर्ष ही कोई स्थिति निर्मित होने की सम्भावना है निदेशक, सामुदायिक स्वास्थ्य ने महाराष्ट्र, राजस्थान तथा छत्तीसगढ़ से इलेक्ट्रो होम्योपैथी की जानकारी चाही है, विदित हो कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी में शिक्षा, चिकित्सा, रजिस्ट्रेशन, अनुसंधान एवं शिक्षण व प्रैक्टिस करने हेतु मा0 न्यायालयों द्वारा दिये गये अद्यतन आदेशों के आलोक में उक्त विधा में नियम/विनियम बनाये जाने हेतु महानिदेशक चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवायें उत्तर प्रदेश की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया है।

समिति ने उपरोक्त राज्यों से निम्न बिन्दुओं पर सूचना/अभिलेख उपलब्ध कराने का अनुरोध किया है :–

1– इलेक्ट्रो होम्योपैथी को विनियमित किये जाने के सम्बन्ध में माननीय सर्वोच्च न्यायालय अथवा किसी माननीय उच्च न्यायालय द्वारा पारित निर्णय/निर्णयों की छायाप्रति।

2– इलेक्ट्रो होम्योपैथी विधा को विनियमित किये जाने की कार्यवाही से सम्बन्धित अभिलेखों/निर्गत शासनादेशों की प्रतियां।

3– इलेक्ट्रो होम्योपैथी में शिक्षा, चिकित्सा, रजिस्ट्रेशन अनुसंधान एवं विकास व प्रैक्टिस करने के उद्देश्य से निर्गत अधिनियम/नियमावली यदि कोई हो की प्रतियां।

4– इलेक्ट्रो होम्योपैथी विधा के सम्बन्ध में अन्य सुसंगत अभिलेखों की प्रतियां।

उपरोक्त से स्पष्ट होता है कि उत्तर प्रदेश सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए गम्भीर है और वह चाहती है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों के रजिस्ट्रेशन के सम्बन्ध में कोई नियम/विनियम निश्चित कर दिये जायें आपको याद होगा कि दिल्ली हाईकोर्ट ने सन् 1998 में ही अपने एक आदेश में कहा था कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सक अपनी विधा में प्रैक्टिस करने के लिए अर्ह हैं, माननीय सुप्रीम कोर्ट ने भी अपने आदेश में यथा स्थिति बनाये रखी, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी में शिक्षा, चिकित्सा, रजिस्ट्रेशन अनुसंधान एवं विकास तथा शिक्षण व प्रैक्टिस करने हेतु बनायी गयी समिति द्वारा निरन्तर बैठकों का आयोजन कर सम्भावनायें लगातार तलाशने का प्रयास किया जा रहा है इसी क्रम में महाराष्ट्र, राजस्थान एवं छत्तीसगढ़ राज्य को पत्र लिखकर जानकारी चाही गयी है। समिति द्वारा इस सम्बन्ध में अन्य स्रोत से भी सूचनायें उपलब्ध कराने की अपेक्षा की गयी है, सूचनाओं के अभाव में निःसन्देह कार्य को पूर्ण करना सम्भव नहीं है, सूचनायें एवं साक्ष्य स्वरूप अभिलेख ऐसे होने चाहिये जिससे कोई नकारात्मक सन्देश न जाता हो यदि इसमें किसी भी प्रकार का पक्षपात या लापरवाही की जाती है तो वह इलेक्ट्रो होम्योपैथी के हित में नहीं है, सरकार को भी यह चाहिये कि जो सूचनायें उसे वांछित हैं उसको सार्वजनिक क्षेत्र से जुटाने के लिए आवाहन करे तथा सूचनायें उपलब्ध कराने वालों को भी इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि सूचनायें वास्तविक एवं स्पष्ट हों जिससे हर हाल में इलेक्ट्रो होम्योपैथी का हित हो और इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों की वास्तविक मांग पूरी हो सके तथा उन्हें भी विधिक स्वरूप प्राप्त हो सके।

महाराष्ट्र की स्थिति अदृश्य है छत्तीसगढ़ की स्थिति बहुत मजबूत है किन्तु मौजूदा घटनाक्रम में गलत प्रस्तुति होने के कारण पूरा प्रदेश संकट से जूझ रहा है, वहां के संगठन न तो धैर्य रखना चाहते हैं और न ही वास्तविकता से चिकित्सकों को अवगत होने देना चाहते हैं और तो और माननीय सर्वोच्च न्यायालय के आदेश की मन मानी व्याख्या कर रहे हैं जिसके कारण माननीय उच्च न्यायालय छत्तीसगढ़ द्वारा जो आदेश जारी किये गये हैं वह प्रस्तुति के अनुसार तो सही हैं किन्तु इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए नकारात्मक हैं, राजस्थान की स्थिति के बारे में कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि प्राप्त सूचनाओं के अनुसार शासकीय स्तर पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी को जो स्वरूप प्राप्त हुआ है उसका खुलासा शीघ्र ही उत्तर प्रदेश के स्वास्थ्य महानिदेशालय द्वारा लिखे गये उसके पत्र के उत्तर में प्राप्त होगा स्थिति स्वतः ही स्पष्ट हो जायेगी।

स्थिति जो भी हो उत्तर प्रदेश शासन द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों के पंजीयन के सम्बन्ध में जो रूचि दिखायी दे रही है वह निश्चित ही कोई दिशा तय करेगी।

यदि महाराष्ट्र, राजस्थान एवं छत्तीसगढ़ राज्यों से सूचनायें अनुकूल न प्राप्त हुई तो भी प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थिति में कोई बदलाव नहीं आयेगा क्योंकि सरकार द्वारा पहले ही कहा जा चुका है कि भारत सरकार द्वारा नियमन करने के पश्चात इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा एवं शिक्षा को विनियमित किया जायेगा।

नये के तलाश की उत्सुकता

लोग जीवन भर नवीनता की तलाश में भटकते रहते हैं और इसी नये के भ्रम जाल में उलझते हुए जीवन के उद्देश्य से भटक जाते हैं परिणाम यह होता है कि न उन्हें कुछ नये से मिलता है और पूराने को तो गवां ही चुके होते हैं इलेक्ट्रो होम्योपैथी में लगभग आज भी 90 प्रतिशत लोग नये की तलाश में भटक रहे हैं वह यह नहीं सोच पाते कि घटनायें तो रोज घटती हैं लेकिन कुछ चीजें बार–बार नई नहीं होती हैं जैसे माता पिता एक बार मिल जाते हैं जीवन भर यह हमें संरक्षण देते हैं क्या किसी को जीवन में कई बार नये माता पिता मिलते हैं ?तो इसका उत्तर शायद 100 प्रतिशत लोग न में ही देंगे।

अपवाद हर जगह होते हैं इसलिए उनकी चर्चा नहीं होनी चाहिये यहां पर यह प्रसंग इसलिए लिखा जा रहा है क्योंकि प्रतिदिन हजारों व्यक्ति जिम्मेदार लोगों से पूछते हैं कि क्या कुछ नया हुआ ?यदि यह प्रश्न कोई नव प्रवेशी या नया समर्थक करे तो बात समझ में आती है कि शायद इस व्यक्ति की जिज्ञासा होगी लेकिन जिन्होंने अपना पूरा जीवन इलेक्ट्रो होम्योपैथी की सेवा में गुज़ार दिया हो और जब ऐसे लोग इस तरह के प्रश्न करते हैं तो बहुत अटपटा लगता है नये की तलाश हमें तब थी जब हम अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहे थे आज अधिकार मिल चुके हैं सिर्फ कार्य करना है इलेक्ट्रो होम्योपैथी में बहुत कुछ नया हुआ है सबसे पहला नया 27 मार्च, 1953 को हुआ जब उत्तर प्रदेश सरकार ने पहला अर्धशासकीय पत्र जारी किया था और इलेक्ट्रो होम्योपैथी को शासकीय संरक्षण मिलने की आस जगी थी, दूसरा नया हुआ था 24 अप्रैल, 1975 को जब बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 की स्थापना हुई थी और इलेक्ट्रो होम्योपैथी की शिक्षा को व्यवस्थित ढंग से चलाने के लिए विद्यालयी अवधारणा आकार में लायी गयी थी, तीसरा नया हुआ था जब 18 नवम्बर, 1998 को माननीय दिल्ली उच्च न्यायालय ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए भारत सरकार सहित सभी राज्य सरकारों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों को दिशा निर्देश जारी किये थे, चौथा नया हुआ था 25 नवम्बर, 2003 का वह आदेश जो अज्ञानता व अविवेक के कारण उस समय विष बन गया था आज वही संजीवनी बनकर सामने है, पांचवा नया 5–5–2010 को हुआ था जब सात साल की गहरी निराशा के बाद आशा की किरण जगी थी, छठा नया हुआ था जब 21 जून, 2011 को भारत सरकार का आदेश आया जिसने काम करने की सारी बाधायें दूर कर दीं। जैसे बालक के जन्म के छठवें दिन हर घर में छठी का उत्सव मनाने की परम्परा है और कामना की जाती है कि जन्मे बालक का भाग्य प्रबल हो और भविष्य उज्जवल हो, सातवां नया आदेश सन 2012 में आया और इसने पूरे प्रदेश को प्रफुल्लित करके रख दिया, संतान जन्म के बारहवें दिन संतान का बारहवां मनाकर यह बताया जाता है कि अब यह संतान राष्ट्रहित, परिवार हित व समाज हित के लिए कार्य करेगा। 4 जनवरी, 2012 का यह आदेश हमें यही संदेश देता है कि अब सिर्फ कार्य करना है और कार्य करते हुए इलेक्ट्रो होम्योपैथी को आगे ले जाना है इसे हम महज़ संयोग नहीं कहेंगे और न ही शब्दों की बाजीगरी, इलेक्ट्रो होम्योपैथी में सबकुछ वही घटित हुआ जो परम्पराओं में वर्णित है। शिशु जन्म के बाद शिशु को पढ़ना होता मेहनत करनी होती है अपने लिए दिशा तय करनी होती है अभिभावक पठन पाठन के लिए सिर्फ विद्यालय का चयन करते हैं और ज्ञानार्जन की प्रक्रिया पूरी करते हैं लेकिन ज्ञान और प्रतिभा का प्रदर्शन पालक नहीं बालक ही करता है।

ठीक इसी तरह इलेक्ट्रो होम्योपैथी के अगुवाकारों ने 4 जनवरी, 2012 का आदेश लाकर कार्य करने का रास्ता बना दिया, 2 सितम्बर, 2013 और 14 मार्च, 2016 उनके कार्य रूप में परिणित करने व अधिकार की पुष्टि का आदेश है 1 मई, 2018 का सुप्रीम कोर्ट का आदेश जिसमें माननीय न्यायालय ने स्पष्ट किया है कि भारत सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी पर प्रतिबन्ध नहीं लगाया है, अब आपको इसी पर कार्य करते हुए आगे बढ़ना है इतना पाने के बाद किस नये की तलाश में हैं आप ?क्या आपने ईमानदारी से अपने दायित्वों का निर्वाहन किया है ?अपेक्षायें आवश्यक हैं लेकिन उन अपेक्षाओं के लिए कार्य आपको ही करने होंगे हर पल नया होगा लेकिन नये पन के लिए हम सबको सामुहिक प्रयास करने होंगे मात्र संवाद के माध्यम से या पूछ लेने से काम नहीं चलने वाला है कि क्या कुछ नया हुआ है ?

नये पन की तलाश में जो लोग कार्य नहीं कर रहे हैं या सफलता न मिलने की बात करते हैं वह सही मायने में कार्य कर ही नहीं रहे हैं चूंकि किसी कार्य को करने के लिए जितने आवश्यक उपकरणों की आवश्यकता होती है वह सारे उपकरण आपको बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 द्वारा उपलब्ध करा दिये गये हैं इन उपकरणों का प्रयोग कैसे करेंगे ! यह कला भी बोर्ड के अधिकारियों ने आपको सिखा दी है यदि आप अब भी नहीं सीख पाये हैं तो बोर्ड के किसी सक्षम अधिकारी के सम्पर्क में आयें और जीवन जीने की कला सीखें।

निराशा, अवसाद और चिन्ता आपको अकर्मरणों की श्रेणी में लाकर खड़ा कर देग किसी और के गुण दोषों पर चर्चा

शेष अंतिम पेज पर

BOARD OF ELECTRO HOMOEOPATHIC MEDICINE,U.P.

8-Lal Bagh, Kamla Sharma Marg, Lucknow-226001 E-mail registrarbehmup@gmail.com

PROGRAMME FOR EXAMINATION DECEMBER 2018

Name of the course	26th December, 2018 Wednesday	27th December, 2018 Thursday	28th December, 2018 Friday	29th December, 2018 Saturday
F.M.E.H. 1st. Semester	Anatomy & Physiology	Pharmacy &Philosophy	XX	XX
F.M.E.H. 2nd. Semester	Pathology	Hygiene & Health	Environmental Science	XX
F.M.E.H. 3rd. Semester	Opthalmology including E.N.T.	M.Jurisprudence & Toxicology	Dietetics	XX
F.M.E.H. Final Semester	Obstetrics & Gynaecology	Materia Medica	Practice of Medicine	XX
A.C.E.H.	Anatomy & Physiology	Pharmacy- Philosophy & Materia Medica	Pathology-Hygiene and M.Jurisprudence	Midwifery Gynics, Opthalmology & Practice of Med.

Timing → 9:00 A.M. to 12:00 A.M.

Atiq Ahmad
Examination Incharge

सफलता चाहते हैं ! तो कार्य करें– डा0 इदरीसी

इलेक्ट्रो होम्योपैथी को वस्तुतः यदि हम स्थापित करना चाहते हैं तो हमें कार्य करना होगा क्योंकि सफलता का मूलमंत्र कार्य में छिपा होता है।

मनुष्य का जन्म लेना और कालकवलित होना सामान्य प्रक्रिया है, जो आया है ! वह जायेगा ही !! उसके किये हुये कार्य सदैव याद किये जाते हैं और उनसे प्रेरित होकर भविष्य की नींव रखी जाती है, इतिहास बताता है कि कर्मों से ही व्यक्ति महान बनता है यह विचार इलेक्ट्रो होम्योपैथी के महान चिकित्सक डा0 नन्दलाल सिन्हा की जयन्ती पर आयोजित कार्यक्रम में डा0 एम0 एच0 इदरीसी चेयरमैन, बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने व्यक्त किये, डा0 इदरीसी ने कहा कि जो व्यक्ति महान होते हैं उनकी महानता के पीछे उनके किये गये कार्य ही होते हैं और यदि वह कार्य जनहित में किये गये होते हैं तो सदियों तक उन्हें याद किया जाता है, ऐसा नहीं है कि स्व0 नन्दलाल सिन्हा के पहले इलेक्ट्रो होम्योपैथी में कार्य नहीं हुआ था पहले भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्षेत्र में योग्य व महान चिकित्सकों ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिए कार्य किये जिनमें से डा0 एस0 पी0 श्रीवास्तव, डा0 बल्देव प्रसाद सक्सेना, डा0 पी0 एम0 कुलकर्णी (सभी यश शेष) के नाम प्रमुखतः से लिये जा सकते हैं।

डा0 नन्दलाल सिन्हा ने वह कार्य किये जिससे स्वतन्त्र भारत में इलेक्ट्रो होम्योपैथी को एक सम्मानजनक स्थान प्राप्त हुआ। आज उनके कार्यों की प्रासंगिकता फिर बढ़ गयी है क्योंकि अब वह समय आ गया है जब अपने अस्तित्व की रक्षा करनी है तो कार्य के द्वारा समाज के बीच अपनी उपयोगिता सिद्ध करनी होगी।

डा0 सिन्हा ने अपनी एक अलग पहचान बनाई उन्होंने कैंसर जैसे असाध्य रोग पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की दावेदारी बतायी, साथ–साथ रोगियों को लाभ भी दिया कुष्ठ जैसे गम्भीर रोग पर भी डा0 सिन्हा ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी की उपयोगिता सिद्ध की। अब हम सब चिकित्सकों को मिलकर उस पुरानी दावेदारी को सही सिद्ध करके दिखाना है। डा0 इदरीसी ने अतीत को स्मरण करते हुए बताया कि स्व0 सिन्हा के काम करने का ढंग अलग ही था वह बहुत विश्वासपूर्वक अपनी पैथी पर भरोसा करते थे उन दिनों कैंसर के नाम से लोग कांपते थे, कैंसर जानलेवा बीमारी हुआ करती थी, आज की तरह उत्कृष्ट मशीनें नहीं थीं और न ही कीमोथेरेपी का जन्म हुआ था, कोबाल्ट और रेडियम की किरणों से रोगियों के रोगग्रस्त स्थान पर सिंकायी की जाती थी। बात सन् 1973–74 की है जब कानपुर जैसे पूरे शहर में बड़ी–बड़ी होर्डिंगे लगा करती थीं जिनमें हाथ का पंजा बना होता था बांई तरफ और दांई तरफ लिखा होता था ठहरिए ! कोबाल्ट और रेडियम रेज लगवाने से पहले कैंसर रोगी मिलें !! यह यहाँ पर लिखने का मतलब यह है कि डा0 सिन्हा मान्यता से ज्यादा काम करने पर ध्यान देते थे उनका मानना था कि काम बोलता है।

हम काम के दम पर मान्यता पायेंगे !
मान्यता मांग कर नहीं मिलती, कार्य के परिणामों से मिलती है !!

इसका जीता जागता उदाहरण उन्होंने प्रस्तुत किया सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी की उपयोगिता जाँच के लिए दिये गये कुष्ठ रोगियों के ऊपर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की औषधियों का प्रयोग कर उन्हें आराम दिलाया और सरकार को विवश किया कि सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी की उपयोगिता को स्वीकारे। इसी का परिणाम था कि 27 मार्च, 1953 का वह अर्ध– शासकीय पत्र जो प्रदेश सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए जारी किया था। यह उदाहरण यह सिद्ध करता है कि कार्य की महत्ता श्रेष्ठ है, दुर्भाग्य से आज कार्य के स्थान पर माँगों पर ज्यादा जोर दिया जा रहा है, मान्यता एक ऐसा मुद्दा बना दिया गया है और ऐसा वातावरण तैयार कर दिया गया है कि जैसे बिना मान्यता के कार्य की आवश्यकता ही नहीं है जबकि सत्य यह है कि पहले की तुलना में आज कार्य करने में ज्यादा आसानी है, औषधियों की उपलब्धता भी बढ़ी है माँग और पूर्ति का अनुपात लगभग बराबर है। फिर भी कार्य के प्रति लोगों की रूचि नहीं है तो आइये आज 30 नवम्बर, 2018 के दिन हम सब चिकित्सक यह संकल्प लें कि इतना कार्य करें जिससे सरकार हमें मान्यता देने पर विवश हो जावे। आपको बता दें कि डा0 नन्दलाल सिन्हा का जन्म 30 नवम्बर, 1889 को हुआ था और पूरा देश 30 नवम्बर का दिन सिन्हा जयन्ती के रूप में मनाता है।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के रजिस्ट्रार डा0 अतीक अहमद ने कहा कि डा0 इदरीसी ने जो वास्तविक दृश्य अपने वक्तव्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है निसन्देह उसपर चलकर ही सफलता अर्जित की जा सकती है, भावनाओं के लिए स्थान तो है लेकिन कर्तव्यों पर भावनायें हावी नहीं होनी चाहिये, हर व्यक्ति को अपनी योग्यता का मान होता है, हर चिकित्सक को क्षमतानुसार चिकित्सा करनी होगी जो कुछ यदि हमें नहीं आता है तो साथी चिकित्सक से पूछने में कोई परहेज नहीं करना चाहिये, एक दूसरे से पूछने में ज्ञानवृद्धि होती है, कोई छोटा बड़ा नहीं होता है, हमें किसी अन्य चिकित्सा पद्धति से स्वयं की तुलना नहीं करनी चाहिये, हम जिस पद्धति के हैं उसी पर गर्व करते हैं और गर्व से कार्य करना चाहिये, आज कार्य को प्रमुखतः दें कल अच्छे परिणाम आपकी प्रतीक्षा करेंगे। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के संयुक्त सचिव डा0 मिथलेश कुमार मिश्रा ने कहा कि परिस्थितियां लाख बदल जायें परन्तु कार्य की गति नहीं बदलनी चाहिये क्योंकि परिस्थितियां समय के वशीभूत होती हैं लेकिन कार्य मनुष्य के अधीन होता है इलेक्ट्रो होम्योपैथी का यह एक दुःखद पहलू है कि यहां पर कामनायें तो हर एक व्यक्ति करता है लेकिन कामना की पूर्ति के लिए जो आवश्यक कार्य हैं उनसे विरत रहता है, हमें कार्य संस्कृति को पुनर्जीवित करना है, ऐसे संस्कारों को जन्म देना है जो कार्य को प्रमुखता दें, सिन्हा जयन्ती की सार्थकता मात्र फूल माला चढ़ाकर रस्म अदायेगी से नहीं होनी चाहिये अपितु कार्य करके होनी चाहिये, मान्यता के भूत से ऊपर उठकर कार्य करते हुए मान्यता लेने का प्रयास होना चाहिये जिन लोगों ने आज कार्य करने का संकल्प लिया है वह अपने संकल्प को पूरा करके दिखायें, प्रायः यह देखा जाता है कि संकल्प तो लोग ले लेते हैं

शेष अंतिम पेज पर

behm.up@rediffmail.com
Board of Electro Homoeopathic Medicine, U.P.
Recognised by Government of U.P.
Approved by Directorate General of Medical & Health Services, U.P.

बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0
F.M.E.H. व A.C.E.H. पाठयक्रमों के संचालन हेतु निम्न जनपदों में स्टडी सेन्टर्स के स्थापनार्थ इच्छुक व्यक्तियों/संस्थाओं से आवेदन आमंत्रित करता है

इलाहाबाद, कौशाम्बी, बाँदा, चित्रकूट, झाँसी, ललितपुर, आगरा, मथुरा, मैनपुरी, एटा, कासगंज, हाथरस, मेरठ, बागपत, बुलन्दशहर, सहारनपुर, मुजफ्फर नगर, शामली, रामपुर, बिजनौर, अमरोहा, सम्भल, बरेली, बदायूँ, पीलीभीत, हरदोई,सीतापुर, फैजाबाद, सुलतानपुर, श्रावस्ती, बस्ती, गोरखपुर, खलीलाबाद, बलिया, गाजीपुर,वाराणासी,चन्दौली,मदोई, औरैया,फर्रुखाबाद एवं कन्नौज

आवेदन पत्र एवं निर्देश बोर्ड की वेबसाइट www.behm.org.in (link Affiliation) से डाउनलोड कर सकते हैं।

Offered Courses

Name of the Course	Abbreviation	Eligibility	Duration
Member of Board of Electro Homoeopathic	M.B.E.H.	10+2 (Bio Group) or Equivalent	Three Years
Fellow of Medicine in Electro Homoeopathy	F.M.E.H.	10+2 (Any Stream) or Equivalent	Two Years (4 Semester)
Advance Certificate in Electro Homoeopathy	A.C.E.H.	Registered Practitioner Any Branch or Equivalent	1 Semester
Graduate in Electro Homoeopathic System	G.E.H.S.	10+2 (Bio Group) or Equivalent	4 Years Plus (1 Year Internship)
Post Graduate in Electro Homoeopathy	P.G.E.H.	Graduate in any Medical Stream or Equivalent	2 Years

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़ इण्डिया

राज्य परिषदों का गठन शीघ्र

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में देश में फैली असमंजसयपूर्ण स्थिति को समाप्त करने के लिये इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़ इण्डिया शीघ्र ही राज्य परिषदों का गठन करेगी जिससे देश में व्याप्त उहापोह की स्थिति को विराम दिया जा सके। ज्ञातव्य हो कि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़ इण्डिया इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा व शिक्षा के क्षेत्र में स्वतन्त्र नियामक की भूमिका में है तथा इसे भारत सरकार स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग द्वारा 21 जून, 2011 का आदेश प्राप्त है जिसे केन्द्र सरकार द्वारा **Regulatory ORDER** की मान्यता दी गयी है ऐसी स्थिति में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया का दायित्व बनता है कि देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्षेत्र में जो भी दुविधायें हैं उसे वह दूर करे। इस क्रम में प्राथमिकता के आधार पर दिल्ली राज्य परिषद का गठन करने की प्रक्रिया आरम्भ कर दी गयी है।

नये के तलाश की ..... पेज 2 से आगे

करने से अच्छा है हमें जो मिला है उसपर ही संतुष्ट हों और यह आप निश्चित मानिये कि आपको जितना कुछ मिल चुका है अगर उसका उपभोग आप नहीं कर पाते तो शायद आप कुछ और पाने के लायक नहीं हैं, विधि सम्मत ढंग से कार्य करते हुए उद्देश्य को पाने के लिए कार्य करें चूंकि आने वाले दिनों में आपको बहुत कुछ मिलने वाला है लेकिन जो ले पायेगा वही उसका उपभोग करेगा इसके लिए कृष्ण और सुदामा का एक प्रसंग हर समय याद रखें कि सुदामा और कृष्ण परम मित्रों में थे सुदामा की दुर्दशा को देखकर कृष्ण ने उन्हें सबकुछ दे दिया लेकिन दिशा भ्रमित होने के कारण सुदामा कुछ नहीं देख पाये और कहा कैसा मित्र है ! कुछ दिया ही नहीं, ठीक इसी तरह केन्द्र सरकार और राज्य सरकारों ने हम जैसे सुदामाओं को सबकुछ दे दिया है परन्तु हमारी दृष्टि अभी कुछ नया पाने की है। इसलिए नये की तलाश में भटकना छोड़कर जो मिला है उसका उपभोग करें निश्चित मानिये कि जब आप कार्य करने लगेंगे तब मज़ा आने लगेगा और तभी आपको नये का वास्तविक स्वाद मिलेगा।

किसी ने कहा है – जो ढूढ़ा तो पाईयां गहरे पानी पैठ इलेक्ट्रो होम्योपैथी में भी यही लागू हो रहा है जो मन लगाकर सिर्फ कार्य के लिए समर्पित हैं वह सब पा रहा है और जो सतह पर तैरते हुए मोती की तलाश करता है उसे मोती की जगह सिर्फ पानी के बुलबुले मिलते हैं सतह से धरातल की दूरी ज़्यादा नहीं होती बस बुलन्द हौसले के साथ तैरना आना चाहिये और न चलने वाले के लिए थोडी दूरी भी वर्षों तक नहीं तय की जा सकती है यह तैरने वाले पर है कि दूरी कितने दिन में तय करता है या नहीं करता है, लेकिन हमारे तैराक कुशल हैं वह कुशलता से तैरते हुए हर नदी पार कर लेंगे।।

पैथी की तकदीर हो

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में, नये अध्याय की तुम तस्वीर हो।
लाज रखोगे यू0पी0 की पैथी की तकदीर हो।।

तुम हो इस अध्याय के दीपक, आयूष मे "इ" जुड़ा दोगे।
अपने सच्चे कर्मों से , पैथी की झोली भ दोगे।।

बढ़ते चले नये ज़मानें में तुम, चलता हुआ एक तीर हो।
लाज रखोगे यू0पी0 की, पैथी की तकदीर हो।।

नाम न लिया रुकने का तुम, सोते को जगाते आये हो।
नहीं रुठे कभी कि तुम, तुम रुठे को मनाते आये हो।।

जो पैथी की तकदीर बदल दे, तुम ऐसी तस्वीर हो।
लाज रखोगे यू0पी0 की पैथी की तकदीर हो।।

मान्यता की राह दिखाने वाले, वर्षों से पड़ी थी बातों में।
कहत देवानन्द सागर होगी, राष्ट्रीयकृत पैथी हाथों में।।

तोड़ सके न स्वार्थी जिनको, तुम ऐसी ज़ंजीर हो।
लाज रखोगे यू0पी0 की पैथी की तकदीर हो।।

प्रस्तुति
इलेक्ट्रो होम्योपैथिक कवि एवं चिकित्सक
डा0 देवानन्द सागर M.B.E.H., M.D.E.H. (9628862614)
काउण्ट सीज़र मैटी क्लीनिक
अमौली, फतेहपुर, उ0प्र0

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में ..... प्रथम पेज से आगे

उड़ीसा, झारखण्ड,तमिलनाडु तिलंगाना आदि राज्यों से भी विभिन्न तरह की पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ यह अलग बात है कि आज तक किसी भी संगठन या समूह द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के दैनिक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ नहीं किया गया है। वैसे किसी भी चिकित्सा पद्धति के लिए इस तरह के दैनिक समाचार पत्रों को निकालना अपने आप में एक टेढ़ी खीर है आज नियमित रूप से सिर्फ पाक्षिक इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गजट का ही प्रकाशन हो रहा है इस समाचार के माध्यम से प्रकाशक मण्डल का यह पूरा प्रयास होता है कि पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी से सम्बन्धित जो भी घटनायें घटित हो रही हैं उनकी जानकारी पाठकों तक पहुँचायी जाये विभिन्न संगठनों द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्षेत्र में क्या कार्य किये जा रहे हैं ? इनकी जानकारी भी बिना किसी भेद–भाव के नियमित रूप से प्रकाशित की जाती हैं। आज कल इलेक्ट्रो होम्योपैथी मान्यता की गतिविधियां बहुत तेज़ी से फैल रही हैं इस सच और झूठ की जानकारी भी गज़ट के माध्यम से चिकित्सकों तक पहुँचाने का प्रयास किया जाता है हमारा प्रयास होता है कि जिन विभूतियों ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कार्य किया है उनकी जानकारी सब तक पहुँचे।

निष्पक्ष पत्रकारिता के कारण ही यह समाचार पत्र निरन्तर लोकप्रियता की नई ऊचाईयां छू रहा है, सम्पादक मण्डल इस बात में पूरी सतर्कता बरतता है कि किसी भी तरह से ऐसा कोई समाचार प्रकाशित न किया जाये जिस से समाचार की विश्वसीनता संदिग्ध हो, चिकित्सकों के नये ज्ञानार्जन के लिए यह प्रयास किया जाता है कि कुछ ऐसे वैज्ञानिक और तथ्यपरक लेख प्रकाशित किये जायें जिससे चिकित्सकों का ज्ञानार्जन हो, साथ ही साथ ऐसे इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सकों के अनुभव भी प्रकाशित करने का प्रयास करते हैं जिन्होंने प्रैक्टिस के समय में अर्जित किये हैं।

सफ़लता चाहते हैं तो .... पेज 3 से आगे

लेकिन उसपर अमल नहीं करते हैं।

अन्त में कार्यक्रम के संयोजक डा0 मिथलेश कुमार मिश्रा संयुक्त सचिव इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया ने अपने सम्बोधिन में कहा कि हमारे सभी पूर्व वक्ताओं ने कार्य की महत्ता पर विस्तार से चर्चा की परन्तु यह नहीं बताया कि कार्य कैसे किया जाये ?हमारे चिकित्सक बहुत सीधे हैं, उन्हें यह बताना होगा कि कार्य कैसे किया जाये ?मेरे हिसाब से हर चिकित्सक को चाहिये कि अपने पंजीकरण को ठीक करा ले और अपने क्लीनिक के बाहर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक का स्पष्ट बोर्ड लगाये, इलेक्ट्रो होम्योपैथिक औषधियों का ही प्रयोग करे और इन्हीं औषधियों से रोगी की चिकित्सा करे, हाँ! एक बात और है प्रदेश में वैधानिक रूप से चिकित्सा करने के लिए सी0 एम0 ओ0 कार्यालय में पंजीयन हेतु आवेदन अवश्य प्रेषित कर दें जब तक सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए अलग से व्यवस्था नहीं की जाती है तब तक सी0 एम0 ओ0 ही हमारा अधिकारी होगा वैसे बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थाई व्यवस्था के लिए प्रयास रत है, शीघ्र ही परिणाम आयेंगे, भ्रमित होने की आवश्यकता नहीं है।

जो लोग आप से मान्यता की बात करें आप उनसे कहें कि आप भी काम करें और हमें भी करने दें फिर हम दोनों मिलकर मान्यता की लड़ाई लड़ेंगे, मान्यता तो मिलनी ही है आज नहीं तो कल लेकिन यदि आज काम नहीं किया तो कल का इंतजार व्यर्थ है।

आज के दिन की सार्थकता कार्य से है इसलिए प्राथमिकता के आधार कार्य को स्थान दें कार्यक्रम को अन्य व्यक्ताओं ने भी सम्बोधित किया। कार्यक्रम का संचालन डा0 मारिया इदरीसी ने किया, श्री वसीम इदरीसी व श्री नसीम इदरीसी भी कार्यक्रम में उपस्थित थे।